जनवरी - 2022 अंक - 9 ISSN : 2348-1498

# विरासत

(A Peer Reviewed Research Journal)

इतिहास एवं संस्कृति विभाग
माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–वी विश्वविद्यालय)
उदयपुर – 313001 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

| क्रमांक | शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 14. | देलवाड़ा (राजसमन्द) का अप्रकाशित व्यापारिक शिलालेख (सं. 1835) 1778 ई.<br>**विवेक जैन** | 102 |
| 15. | SUBALTERN STUDIES : An Another Way of Looking at History<br>**Pinal Jain** | 106 |
| 16. | मेवाड़ इतिहास का ऐतिहासिक स्त्रोत – देराश्री संग्रह<br>**निशा मेनारिया** | 114 |
| 17. | आर्थिक स्वावलम्बन के व्यावहारिक दर्शन के रूप में महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा–संकल्पना<br>**डॉ. भारती दीक्षित** | 125 |
| 18. | ऐतिहासिक पर्यटन का संग्रहालयीय अभिगम : उदयपुर नगर के विशेष संदर्भ में<br>**डॉ. प्रतिभा** | 130 |
| 19. | मांडलगढ़ में शाहपुरा शासको की जागीरों का ऐतिहासिक अध्ययन<br>**हरि लाल बलाई** | 140 |
| 20. | मेवाड़ की धरोहर मन्देसर का सूर्य मन्दिर : एक अवलोकन<br>**नारायण पालीवाल** | 148 |
| 21. | राजस्थान स्वाधीनता संग्राम में प्रतापसिंह बारहठ का योगदान<br>**डॉ. सी.एल. भगोरा** | 153 |
| 22. | HISTORY OF ACCOUNTING : A JOURNEY FROM CUNEIFORM TO CRYPTO-CURRENCY<br>**Dr. Nuzhat Sadriwala** | 158 |
| 23. | पुस्तक समीक्षा | 169 |


Scanned with CamScanner

18

# ऐतिहासिक पर्यटन का संग्रहालयीय अभिगम : उदयपुर नगर के विशेष संदर्भ में

**डॉ. प्रतिभा**
आचार्य, इतिहास विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

संग्रहालय (संग्रह का आलय अथवा घर) शब्द का तात्पर्य उस स्थल से है जहां वस्तुएं संगृहित हों। ज्ञान की यूनानी देवियों 'म्यूजेज' से निःसृत इसका अंग्रेजी पर्याय 'म्यूजियम' भी 'ज्ञान के केन्द्र' के रूप में इसी अर्थ को ध्वनित करता है। इस प्रकार समग्रता में संग्रहालय अथवा 'म्यूजियम' का आशय उस स्थल से है जहां मानव को उपयोगी ज्ञान प्रदान करने वाली वस्तुओं का प्रदर्शन किया जाता है।[1]

उपयोगी एवं आकर्षक वस्तुओं के संचय अथवा संग्रह की प्रवृत्ति एक स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है। जब इन संचित वस्तुओं को एक निश्चित स्थान पर सुरक्षित रूप से रखा जाकर सबके ज्ञान और आनन्द के लिए सार्वजनिक रूप से व्यवस्थित किया जाता है तो वह स्थान 'संग्रहालय' के रूप में जाना जाता है। एक संग्रहालय में मुख्यतः तीन तत्वों की आवश्यक उपस्थिति होती है– संग्रह, ज्ञान (शिक्षा) और आनन्द।

वर्तमान काल में संग्रहालय की अवधारणा में व्यापक सामयिक परिवर्तन हुए हैं। अपनी प्रारम्भिक अवस्था में प्राचीन तथा दुर्लभ वस्तुओं का संचय–गृह समझा जाने वाला संग्रहालय आज ज्ञान–केन्द्र तथा मनोरंजन केन्द्र भी बन गया है, जहां दर्शक अपनी थकान मिटा सकता है, आनन्द प्राप्त कर सकता है तथा अपनी उत्सुकता शान्त कर ज्ञान रूपी अनुभव को प्राप्त कर सकता है। संग्रह, संरक्षण और प्रदर्शन के साथ–साथ प्रदर्शित वस्तुओं के विश्लेषण पर भी बल दिये जाने से संग्रहालय आज उच्च शिक्षा और शोध से सम्बद्ध अकादमी के रूप में भी विकसित हो गए हैं। स्पष्ट रूप से अब संग्रहालय को ज्ञान केन्द्र, वैचारिक पृष्ठभूमि, नवीन रुचियों की पूर्ति और दृश्य शिक्षा के एक सशक्त स्रोत के रूप में स्वीकार किया जाता है।[2]

पाश्चात्य विश्व में संग्रहालयों के व्यवस्थित विकास के विस्तृत विवरण तो प्राप्त होते ही हैं, भारत में भी इनके विविध रूपों में उल्लेख प्राप्त होते हैं। रामायण में दशरथ और रावण के महलों के वर्णनों में कुछ कक्षों में देवमूर्तियों तथा पूर्वजों की मूर्तियों के साथ–साथ शस्त्रास्त्रों के संग्रह के उल्लेख हैं।[3] गुप्तकालीन कवि कालिदास के रघुवंश आदि ग्रन्थों के साथ–साथ भास के प्रतिमानाटकम[4] में चित्रवीथियों तथा मूर्तिकक्षों के उल्लेख मिलते हैं। राजपूत काल में भवभूति रचित उत्तररामचरित में राजमहल में 'चित्रवीथी' का प्रसंग प्राप्त होता है।[5] बाणभट्ट ने चित्रवीथी के लिए 'विमान–पंक्ति' शब्द का प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner

पुरातात्विक दृष्टि से बुद्ध के शरीरावशेषों को संचित–संरक्षित रखने के उद्देश्य से परिकल्पित स्तूपों की मूल अवधारणा संग्रहालयीय ही है। सांची और भरहुत के स्तूप इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं एवं विविध मथुरा से प्राप्त कुषाण राजाओं की मूर्तियां देव–कुलों में पितृ–मूर्ति संग्रह और पितृ–पूजा का संकेत देती हैं।

मध्यकाल तथा आते–आते संग्रह की रुचि का भी विशिष्टीकरण हुआ, जिससे संग्रहालयों के विकास को प्रोत्साहन मिला। राजपूत शासकों ने अपनी रुचि के अनुसार शास्त्रों, वस्त्राभूषणों आदि विविध वस्तुओं को संजोया तो सल्तनतकालीन शासकों ने अपने महलों को भव्य और आकर्षक वस्तुओं से सजाया। फिरोजशाह तुगलक का विरासत–प्रेम अप्रतिम था। कहा जाता है कि उसके पास संस्कृत की पुस्तकों का विशाल संग्रह था। मुगल शासक अकबर ने प्राचीन पांडुलिपियों, चित्रों आदि के संग्रह को प्रोत्साहित किया।

1796 ई. से भारत में आधुनिक संग्रहालय का प्रारम्भ माना जाता है, जब 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' ने वर्षो से एकत्रित कलाकृतियों को कोलकाता में सुव्यवस्थित ढंग से रखने का निर्णय लिया। 1814 में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा पश्चिमी मानदंडों पर भारतीय संग्रहालय की स्थापना हुई जिसके प्रथम मानद संग्रहालयाध्यक्ष डेनिश वनस्पतिशास्त्री नैथानिल वालिच बने। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में लखनऊ, नागपुर, लाहौर, दिल्ली, कोलकाता, मथुरा, जयपुर, भोपाल, उदयपुर आदि जगहों पर संग्रहालय स्थापित किए गए। लार्ड कर्जन के समय में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक सर जॉन मार्शल बने। अब भारत में संग्रहालय के विकास में तीव्रता आयी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा महत्वपूर्ण उत्खनित स्थलों पर विभिन्न संग्रहालय स्थापित किए, जिनकी संख्या 1936 तक आते– आते 100 तक पहुंच गयी। वर्तमान काल में संग्रहालयों की संख्या 400 पार कर चुकी है। ऐतिहासिक और पुरातात्विवक संग्रहालयों के साथ–साथ प्राकृतिक इतिहास, शिल्प–कला, वनस्पति एवं वन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा तथा मानव–विज्ञान, कृषि, आयुर्विज्ञान, आदि से सम्बद्ध संग्रहालय भी स्थापित किए गए हैं।

आधुनिक युग की पर्यटन–क्रांति में संग्रहालयों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विरासतीय स्मारकों के साथ–साथ संग्रहालय पर्यटन ऐतिहासिक पर्यटन के महत्वपूर्ण आयाम के रूप में उभर कर आया है। स्थापत्य और संस्कृति के विविध पहलुओं यथा मूर्तिकला, चित्रकला, वस्त्राभूषण, अस्त्र–शस्त्र तथा सिक्के आदि पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं और इनका संग्रह तथा संरक्षण प्रमुखतः संग्रहालयों में ही होता है। विदेशी पर्यटकों के माध्यम से संग्रहालय विदेशी–मुद्रा अर्जन के माध्यम से देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भागीदारी निभाने के साथ–साथ विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक सेतु का भी कार्य करते हैं।

भारतीय सन्दर्भ में देखें तो यहां की महान सांस्कृतिक सम्पदा के आधार के रूप में संग्रहालय श्रेष्ठ ऐतिहासिक विरासत के प्रमाण उपस्थित करते है।[6] भारत में प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम मुम्बई सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद तथा राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली के अतिरिक्त सामान्य तथा विशिष्ट प्रकृति के अनेकों संग्रहालय हैं, जो पर्यटन में महत्ती भूमिका निभाते हैं। आगन्तुक विदेशी पर्यटक जहां इनके माध्यम से

Scanned with CamScanner

भारतीय इतिहास, संस्कृति और परम्परा से रूबरू होते हैं, वहीं घरेलू पर्यटक अपने अतीत से खंगालने का प्रयास करते हैं। आधारिक संरचनाओं और विविध सेवाओं के विकास के साथ–साथ भारतीय कला शिल्प से सम्बन्धित क्रय–विक्रय को भी प्रोत्साहन इन संग्रहालयों के माध्यम से होता है।

उदयपुर नगर मेवाड़ का ही नहीं, भारत वर्ष का भी एक महत्वपूर्ण नगर है जिसे पर्यटन मानचित्र पर गौरवशाली स्थान प्राप्त है। अरावली की गिर्वा उपत्यका में बसी मनोरम प्राकृतिक दृश्यावली के मध्य वर्तमान यह नगर खूबसुरत झीलों–तालाबों के साथ–साथ कला और स्थापत्य के अद्भुत प्रतिमान अपने स्मारकों के लिए भी जाना जाता है। उदयपुर नगर के विषय में 1902 में यहां की यात्रा पर आए लार्ड कर्जन के उद्गार ही पर्याप्त हैं, जिन्होंने कहा था– "सौन्दर्य स्थलों में सबसे सुन्दर, राजपूताना के वैभवशाली स्थानों में सबसे भव्य यह उदयपुर नगर जैसा कि आज हमने देखा है और जैसाकि अब रात्रि में हम देख रहे हैं हमारे मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ेगा। नगर के हिमवत् श्वेत प्रासाद और उसके कुंज, गुंबजदार झरोखे, उसके पुष्पोद्यान, छायादार वनाच्छादित टापू और सुन्दर जलाशय, ये सब दर्शक को युग–युगान्त से चलते आए राजवंश के राजा के, जो स्वयं भी अपने कुल के गौरव, प्रतिष्ठा और देशभक्ति का मूर्तरूप है, श्रृंगार और शौर्य के अनुकूल साज–सज्जा से लगते है।"[7]

उदयपुर में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के अनेक स्थल हैं, जिनका भ्रमण कर पर्यटक स्वदेशाभिमान और स्वातंत्र्य चेतना के गौरव से सम्मोहित हो उठते हैं। विरासतीय भव्यता की अनुभूति कराने वाले यहां के प्रमुख स्थल हैं– सिटी पैलेस परिसर, जग निवास (लेक पैलेस), जग मंदिर, महाराणा प्रताप स्मारक (मोती मगरी), लक्ष्मी विलास, सहेलियों की बाड़ी, सज्जन निवास बाग, सज्जनगढ़ महल आदि।

विरासतीय स्मारकों के अतिरिक्त ऐतिहासिक पर्यटन के अन्य आयाम संग्रहालय पर्यटन के दृष्टिकोण से भी उदयपुर नगर पर्याप्त समृद्ध है। ऐतिहासिक–पुरातात्विक संग्रहालयों के अतिरिक्त विशिष्ट प्रकृति के संग्रहालय भी यहां है। उदयपुर में स्थित कतिपय प्रमुख संग्रहालयों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् प्रस्तुत है –

## राजकीय संग्रहालय, उदयपुर

जयपुर (1887 ई.) के पश्चात् राजस्थान में संग्रहालय की स्थापना उदयपुर में ही की गई। 1 नवम्बर 1890 को सज्जन निवास (गुलाब बाग) में 'विक्टोरिया हॉल म्यूजियम आर्ट पुस्तकालय' के रूप में इसका उद्घाटन इंग्लैण्ड के युवराज एडवर्ड सप्तम के ज्येष्ठ पुत्र एल्बर्ट विक्टर द्वारा किया गया।[8] इसके प्रथम अध्यक्ष (क्यूरेटर) का पद प्रसिद्ध इतिहासकार गौरीशंकर ओझा ने सुशोभित किया। 1968 में यह संग्रहालय स्थानान्तरित होकर राजमहल के कर्ण विलास अथवा हिसाब दतर महल में लाया गया और प्रताप संग्रहालय के नाम से जाना गया। बाद में यह राजकीय संग्रहालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मूलतः क्षेत्रीय प्रकृति के इस संग्रहालय में मेवाड़ क्षेत्र के प्राचीन शिलालेख, प्रतिमाएं, अस्त्र–शस्त्र, लघु चित्र तथा सिक्के संगृहीत हैं जो यहां के इतिहास, संस्कृति एवं कला विषयक ज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यह संग्रहालय बाल–दीर्घा, सांस्कृतिक (हस्तशिल्प) दीर्घा, शिलालेख दीर्घा, प्रतिमा दीर्घा तथा चित्र दीर्घा के रूप में पांच दीर्घाओं में विभक्त है।

Scanned with CamScanner

मेवाड़ के छापे के वस्त्र, बंधेज के दुपट्टे तथा विभिन्न ठिकानों और जातियों के आधार पर तैयार पगड़ियों आदि का प्रदर्शन यहां है, तो काष्ठ निर्मित विविध मॉडल और हाथी दांत से निर्मित कलात्मक वस्तुएं भी यहां हैं। महाराणा प्रताप और महाराणा फतेह सिंह की कांस्य–प्रतिमाएं यहां सुशोभित हैं तो महाराणाओं के अस्त्र–शस्त्र कवच आदि के भी दर्शन होते हैं।

शिलालेखों में प्रथम शताब्दी ई.पू. का घोसुण्डी शिलालेख महत्वपूर्ण है, जो चित्तौड़गढ़ के समीप नगरी से प्राप्त हुआ है। भीलवाड़ा जिले का नन्दसा यूप शिलालेख, छोटी सादड़ी का भंवर माता शिलालेख तथा शिव मंदिर सम्बन्धित कल्याणपुर शिलालेख भी यहां है। गयासुद्दीन तुगलक से सम्बद्ध एक फारसी शिलालेख के साथ–साथ मेवाड़ के महाराणाओं के शिलालेख भी यहां संगृहित हैं। ये शिलालेख मेवाड़ के इतिहास के तिथिक्रम निर्धारण तथा सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति के ज्ञान की दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं।[9] प्रतिमा दीर्घा में गुप्तोत्तर युग से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक की मूर्तिकला के क्रमिक विकास का प्रदर्शन है, तो चित्रकला दीर्घा में भगवान कृष्ण एवं रुक्मिणी से सम्बद्ध विविध कलात्मक चित्रों का प्रदर्शन है।

## पुरातत्व संग्रहालय, आहड़

सिन्धु घाटी सभ्यता की समकक्ष आहड़ सभ्यता का काल 2000 ई. पू. के आसपास का माना जाता है। इस सभ्यता के अवशेष उदयपुर में स्थित आहड़ में प्राप्त हुए हैं, जिसे स्थानीय लोग धूलकोट के नाम से जानते हैं।

सर्वप्रथम इस पुरास्थल की खोज 1952–53 में अक्षयकीर्ति व्यास द्वारा की गई। तदनन्तर कई महत्वपूर्ण उत्खननों के बाद इस ताम्रयुगीन सभ्यता का ज्ञान विश्व को हुआ। आहड़ के अतिरिक्त गिलुण्ड, बालाथल आदि स्थलों पर भी इस सभ्यता के विस्तार के संकेत प्राप्त हुए।

धूलकोट के उत्खननों में मृद्भाण्ड, ताम्र–कुल्हाड़ियों तथा अन्य महत्वपूर्ण पुरा–उपकरणों की प्राप्ति हुई।[10] धूलकोट में प्राप्त चल–अचल अवशेषों को यहीं स्थित एक भवन में रखा गया, जिसे आहड़ संग्रहालय का नाम दिया गया। आहड़ संग्रहालय लगभग 4000 वर्ष पुरानी पुरा–सामग्रियों से युक्त प्रदेश का एकमात्र संग्रहालय है। ताम्र–पाषाणकालीन तथा ऐतिहासिक युगीन पुरावशेषों में मिट्टी की ईटों से निर्मित भवन–सरंचना, चूल्हों के अवशेष, लोहा प्रगलन भट्टियां, मृद्भाण्ड, अनाज के दाने, सिल–बट्टे, तांबे व लोहे के औजार, आभूषण, सिक्के, प्रतिमाएं एवं मिट्टी से निर्मित मूर्तियां हैं जिन्हें अलग–अलग कक्षों में प्रदर्शित किया गया है।[11]

## बागौर की हवेली संग्रहालय

पिछोला झील के किनारे गणगौर घाट पर स्थित बागौर की हवेली में मेवाड़ के सामन्ती घराने का निवास रहा है। बागौर के सामन्त मेवाड़ महाराणा की सेवा में प्रस्तुत होने के लिए जब उदयपुर आते थे, तो यहीं ठहरते थे। इस हवेली के एक हिस्से में होटल का संचालन होता है तथा पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का कार्यालय भी यहीं स्थित है, जिसके द्वारा महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, गोवा और दमन–दीव की लोक कला एवं संस्कृति के संरक्षण–प्रोत्साहन का कार्य किया जाता है।

Scanned with CamScanner

इसी हवेली के 18 कमरों को संग्रहालय का रूप प्रदान किया गया है। इनमें बैठक कक्ष, शयन कक्ष, रसोई घर, स्नानागार, पगड़ी कक्ष, वाद्ययंत्र कक्ष, महारानी कक्ष, गणगौर कक्ष, पूजा कक्ष आदि के माध्यम से राजसी जीवन शैली, वास्तु शिल्प, वेशभूषा, आभूषण, पर्व, त्यौहार तथा लोक कलाओं का प्रदर्शन किया गया है।[12] कला दीर्घा में गुजरात की पिथौरी चित्रकारी, बिहार की मधुबनी चित्रशैली, उड़ीसा की फड़ चित्रकारी आदि के साथ–साथ राजस्थान की नाथद्वारा, किशनगढ़, कांगड़ा, मेवाड़ी आदि शैलियों से जुड़े चित्रों को प्रदर्शित किया गया है। एक कक्ष में थर्माकोल की सुन्दर शिल्पकृतियों का भी प्रदर्शन किया गया है।[13]

बागौर की हवेली संग्रहालय ने विश्व की प्रसिद्ध ट्रेवल वेबसाइट ट्रिप एडवाइजर द्वारा 1915 में घोषित ट्रेवलर्स च्वॉइस अवार्ड में पूरी दुनिया के संग्रहालयों में स्थान बनाते हुए भारत के संग्रहालयों में पहला स्थान प्राप्त किया।[14]

## लोककला मण्ड़ल संग्रहालय, उदयपुर

लोककला के प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण से सम्बद्ध 'भारतीय लोककला मंडल' ने राजस्थानी कला को वैश्विक पहचान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहां लोक नृत्य प्रदर्शन विभाग, हस्तशिल्प प्रशिक्षण विभाग, काष्ठकला प्रशिक्षण केन्द्र, ग्रामीण संचार एवं कठपुतली अनुसंधान एवं प्रदर्शन केन्द्र हैं।

प्रमुख रूप से इस केन्द्र को प्रदर्शनकारी कलाओं के अन्यत्र दुर्लभ विशाल संग्रह के लिए जाना जाता है। पाबू जी की फड़, गवरी, तुर्रा–कलंगी, अग्नि नृत्य, तेराताली, कच्छी घोड़ी, गैर, गीदड़ आदि नृत्य झांकियों के साथ साथ बस्सी की काष्ठकला मोलेला की प्रसिद्ध मृण्मूर्तियाँ यहां प्रदर्शित हैं।

मेहंदी के विभिन्न मांडने, दीवारों पर बनाए जाने वाले थापे, भूमि–अलंकरण, सांझीकला, लोक–खिलौने, ग्रामीण तथा शहरी जीवन में अन्तर दर्शाने वाले वस्त्रालंकार सहित आदमकद मूर्तियां भी यहां प्रदर्शित हैं, परन्तु यहां का सर्वप्रमुख आकर्षण हैं–देश विदेश की प्रमुख कठपुतलियां। मैक्सिको, इटली, जर्मनी, चैकोस्लोवाकिया, फ्रांस आदि की कठपुतलियों के साथ–साथ राजस्थान की पारम्परिक कठपुतलियों, बंगाल, गोवा, उड़ीसा, आंध्र आदि की कठपुतलियों को भी दर्शाया गया है।[15] लोक कला मंडल में स्थित लघु रंगमंच पर कठपुतलियों के नृत्यों के साथ साथ पारम्परिक राजस्थानी नृत्यों का प्रदर्शन आगन्तुकों के लिए स्मरणीय बन जाता है।

## क्रिस्टल गैलरी, सिटी पैलेस, उदयपुर

विश्व के बड़े और महंगे संग्रहों में से एक क्रिस्टल गैलरी कांच के झूमर बनाने वाली यू.के. की प्रसिद्ध कम्पनी ऑसलर के कट ग्लास की उत्तम गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं का संग्रह है।

इस क्रिस्टल गैलरी में मुख्य रूप से प्रदर्शित सामान ऑसलर कम्पनी द्वारा तैयार हैं। यह कम्पनी विक्टोरियन युग के सबसे महत्वपूर्ण कट ग्लास के लग्जरी सामानों की निर्माता रही है। 1804 में बर्मिंघम में स्थापित इस कम्पनी ने अपने कला क्षेत्र में कट ग्लास उद्योग में सरंचनात्मक संभावनाएं तलाश करते हुए क्रिस्टल ग्लास की अवधारणा को मूर्तरूप देकर क्रांति ला दी, जिसका सबसे बढ़िया उदाहरण उदयपुर संग्रह में है।

Scanned with CamScanner

वर्तमान में इसमें डाइनिंग टेबल से लेकर टेबल, सोफा सेट, धुलाई करने के बड़े कटोरे, जाम, ट्रे, शीशे की सुराही, परयूम की बोतल, मोमबत्ती स्टैण्ड, कॉकरी, कांच के बैड भी हैं। यहां का मुख्य आकर्षण हीरे जवाहरात जड़ा हुआ एक कारपेट है। इसी प्रकार हाथ से खींचकर चलाने वाला शाही पंखा है, जिस पर लाल साटिन का कपड़ा चढ़ा है। उस पर कशीदाकारी से मेवाड़ राज्य का प्रतीक सूर्य बना है।[16]

## विंटेज एवं क्लासिक कार संग्रहालय

ऑटो मोबाइल के क्षेत्र में रुचि रखने वाले लोगों के लिए उदयपुर में गुलाब बाग के समीप लेक पैलेस रोड पर पूर्व में मेवाड़ राजघराने के मोटर गैराज रहे स्थान में विशिष्ट पुराने तथा उत्तम श्रेणी के वाहनों का उत्कृष्ट संग्रह हैं। 15 फरवरी, 2000 को प्रारम्भ इस संग्रहालय में पूर्व मेवाड़ राजघराने की सम्पत्ति रही शाही कारें, जीप, ट्रक तथा घोड़ों द्वारा खींची जाने वाले बग्घियां प्रदर्शित हैं।

भारत के अत्यन्त विशिष्ट कार–संग्रहों में से इस एक संग्रहालय में दुर्लभ मर्सिडीज मॉडल्स के साथ–साथ 1934 की रॉल्स रॉयल्स, 1936 वॉक्स हॉल, 1937, ओपल मॉडल, 1939, कैडिलेक खुली कनवर्टिबल कार सम्मिलित हैं। इनमें से कई कारों को उनके राजकीय मालिकों की आवश्यकतानुसार अनुकूलित भी किया गया था। मेवाड़ राजपरिवार के स्वामित्व वाले इस संग्रह की अनूठी विशेषता है कि यहां प्रदर्शित सभी कारें अभी भी सही स्थिति में हैं तथा समय–समय पर चलाई जाती हैं। साथ ही पुराने शैल पैट्रोल पम्प एवं विरासतीय कैफे से इस संग्रहालय की महत्ता में और वृद्धि हो जाती है। वस्तुतः शाही पृष्ठभूमि में निर्मित शाही परिवारों की भव्य जीवन शैली को दर्शाने वाला यह संग्रहालय धीरे–धीरे पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है।[17]

## जनजाति संग्रहालय, उदयपुर

राजस्थान की विभिन्न जनजातियों की सामाजिक–सांस्कृतिक तथा धार्मिक परम्पराओं के संरक्षण के उद्देश्य से स्थापित माणिक्य लाल वर्मा जनजाति शोध–संस्थान प्रांगण में 30 दिसम्बर, 1983 को राज्य के पूर्व राज्यपाल एयर मार्शल श्री ओ.पी. मेहरा द्वारा जनजाति संग्रहालय का उद्घाटन किया गया।

संग्रहालय में राज्य की सभी प्रमुख जनजातियों भील, मीणा, गरासिया, कथौड़ी तथा सहरिया आदि के प्रतीकों को सहेजा गया है। इनमें वस्त्राभूषण, अस्त्र–शस्त्र, देवरे, देवता, लोक–संस्कृति, वाद्य यंत्र, भित्ति चित्र, मांडणे, सांझी तथा गोदना आदि का जीवंत प्रदर्शन किया गया है।

भील तथा गरासिया जनजाति के लोगों द्वारा विवाह के समय पहले जाने वाले वस्त्राभूषणों में भेद को रुचिकर रूप में दर्शाया गया है। भील, गरासिया तथा सहरिया आदि समुदायों के आवासों के प्रतिरूप बनाकर उनके रहन–सहन, खान–पान एवं दैनन्दिनी जीवन–यापन के विविध पहलुओं का अंकन यहां किया गया है।

जनजाति वाद्य–यंत्र कक्ष में तंदुरा, सारंगी, मंजीरा, पावड़ी, घुंघरू, कुंडी, ताशी, इकतारा, ढोलक, मृदंग जैसे वाद्ययंत्रों का प्रदर्शन है तो इतिहास दीर्घा में स्वातंत्र्य युद्धों में अपने प्राणों का बलिदान करने वाले राणा पूंजा, गोविन्द गुरु, काली बाई, मोतीलाल तेजावत आदि महापुरुषों के चित्रों का प्रदर्शन है। परम्परागत जनजातीय अस्त्र–शस्त्रों तीर–कमान, धारिया, लंबी, तम्बल, फरसा, कटार, बंदूक, तलवार

Scanned with CamScanner

आदि का प्रदर्शन स्वयं में आकर्षण का केन्द्र हैं तो उनके द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले अनाजों मक्का, कोदरा, हमलई, माल बाटूती आदि के नमूने दर्शकों का कौतूहल बढ़ाते हैं।[18]

## मानव विज्ञान सर्वेक्षण संग्रहालय

वर्ष 2013 में प्रतापनगर में स्थापित इस संग्रहालय में पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति से लेकर आधुनिक मनुष्य के रूप में परिवर्तित होने तक की उसकी विकास यात्रा को दिखाया गया है। मानव के रहन–सहन, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन तथा आर्थिक गतिविधियों आदि को चित्रों एवं लेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। विभिन्न जनजातीय संस्कृतियों के संरक्षण तथा मानव विकास प्रक्रिया पर केन्द्रित अध्ययन की दृष्टि से पश्चिमी भारत का यह अकेला केन्द्र है जहां उनसे सम्बद्ध विविध चिह्नों को सहेजा गया है।[19] इनमें शिकार तथा कृषि से जुड़े उपकरणों के साथ–साथ कशीदाकारी, आभूषण, वाद्ययंत्र, यातायात साधनों आदि का ज्ञानप्रद प्रदर्शन है। वनस्पतियों, गृह–निर्माण सामग्रियों, बर्तनों के साथ देवी–देवताओं, पूजा स्थलों आदि का भी अंकन है।

संग्रहालय की एक अन्य विशेषता राजस्थान, गुजरात, गोवा, दमन–दीव व दादरा एवं नागर हवेली की संस्कृतियों का संग्रहण है, जिसमें वहां के पहनावे, संगीत तथा कला का प्रदर्शन सम्मिलित है। राजस्थान की भील, मीणा, सहरिया, गरासिया जनजातियों के साथ ही अन्य राज्यों की वालड़ी, रागोवा, रेबारी, गाड़ोलिया लोहार, पधरस, कोठवालिया, सिद्दी, कोलगास, काथौड़ी आदि जनजातियों की ऐतिहासिक सांस्कृतिक यात्रा यहां देखी जा सकती है।[20]

संग्रहालय में क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा राजस्थान और गुजरात के जनजातीय क्षेत्रों से संगृहीत करीब 600 कलाकृतियां प्रदर्शित हैं।[21] गाड़ोलिया लौहार समुदाय से सम्बद्ध तीन भिन्न–भिन्न प्रकार की बैलगाड़ियाँ आगन्तुकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। दीवारों पर उकेरे गए चित्र भी अनूठापन लिए हुए हैं। चटाई, कम्बल, वस्त्र, घड़े का मुण्डा जैसे मरुस्थलीय शिल्पों के अंकन के साथ साथ चौपड़, बाघ–बकरी, नोककारी आदि खेलों और मनोरंजन साधनों का भी चित्रण विशिष्ट है।[22]

## शिल्पग्राम जीवन्त संग्रहालय

विरासतीय ऐतिहासिक स्मारकों व संस्कृति को सहेजकर प्रतीकात्मक भाव से जनमानस को परिचयात्मक रूप में प्रस्तुत करने हेतु फतेहसागर झील के दूसरे किनारे पर उदयपुर से आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित हवाला गांव में 1989 में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा ग्रामीण शिल्प एवं लोक कला परिसर 'शिल्पग्राम' का सृजन किया गया। 70 एकड़ में फैले इस कला एवं शिल्प परिसर में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा प्रान्तों की लोक संस्कृति की परिचायक 26 पारम्परिक झोपड़ियों का निर्माण किया गया है।[23]

शिल्पग्राम स्थित संग्रहालय में ग्रामीण दस्तकारी एवं हस्तकलाओं का प्रदर्शन है। इनमें मिट्टी की कलात्मक कोठियाँ, वस्त्रों पर की गई उत्तम कसीदाकारी, विभिन्न प्रान्तों के आदिवासी इलाकों में

Scanned with CamScanner

प्रचलित मुखौटे, अलंकृत लकडी एवं धातु की वस्तुएं, कठपुतली, खिलौने आदि हैं। प्रत्येक वर्ष अक्टूबर माह के प्रथम पखवाडे मे अंतर्राष्ट्रीय स्तर का शिल्प मेला आयोजित किया जाता है। इसमें देश भर के शिल्पियों को अपनी कलाकृतियों के प्रदर्शन एवं विक्रय हेतु आमंत्रित किया जाता है। दिसम्बर मास के अंतिम दिनों में यहां प्रतिवर्ष शिल्पग्राम महोत्सव का आयोजन होता है, जिसमें पूरे देश से शिल्पकार अपनी कला के प्रदर्शन एवं विक्रय के लिए भाग लेते हैं। महोत्सव में राजस्थान सहित अन्य राज्यों के लोक–कलाकारो द्वारा प्रस्तुत गीत नृत्य, वादन आदि आगन्तुकों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं।[24]

## प्रताप गौरव केन्द्र

मेवाड़ की ही नहीं, वरन् समूचे भारत की गौरवमयी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागृति उत्पन्न कर उसे जनमानस से जोड़ने के उदात्त उद्देश्य को लेकर उदयपुर में प्रताप गौरव केन्द्र की स्थापना की गई है। 18 अगस्त, 2008 को 400 फीट ऊँचे 'टाइगर हिल' पर इस केन्द्र का प्रारम्भ हुआ।[25]

महाराणा प्रताप के साथ–साथ क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक–सांस्कृतिक विरासत एवं श्रेष्ठ विभूतियों का दर्शन आधुनिक तकनीकी के माध्यम से कर आगन्तुक अभिभूत होते हैं। अष्टधातु से निर्मित सन्यासी मुद्रा में महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊँची प्रतिमा दूर से ही आगन्तुकों को आकर्षित करती है। भारत माता, मीरा, चेतक आदि की प्रतिमाएं भी अद्भुत हैं। कुल मिलाकर ऑडिटोरियम, उद्यान आदि से समृद्ध प्रताप गौरव केन्द्र पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र सिद्ध हो रहा है।[26]

इन संग्रहालयों के साथ ही उदयपुर नगर में कई अन्य संग्रहालय हैं जो विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। महाराणा प्रताप स्मारक समिति द्वारा संचालित फतेह सागर किनारे स्थित मोती मगरी संग्रहालय में समृद्ध क्षेत्रीय विरासत के दर्शन होते हैं। इसी तरह क्षेत्रीय रेलवे ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट के मॉडल कक्ष में रेल संचालन की सम्पूर्ण व्यवस्था को मॉडल्स द्वारा प्रदर्शित किया गया है। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ से सम्बद्ध साहित्य संस्थान के समृद्ध संग्रहालय और अभिलेखागार में अद्भुत विरासतीय संग्रह की झलक प्राप्त होती है तो प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, प्रताप शोध प्रतिष्ठान और सरस्वती पुस्तकालय अमूल्य हस्तलिपियों एवं पुस्तकों के संग्रह के लिए प्रख्यात हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संग्रहालयों की दृष्टि से उदयपुर नगर पर्याप्त समृद्ध है और पर्यटन के महत्वपूर्ण गन्तव्य के रूप में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। पर्यटकों के उदयपुर आगमन और विभिन्न स्थलों पर उनके भ्रमण और ठहराव की प्रवृत्तियों पर विचार करें तो नगर के ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थल पर्यटन गन्तव्य के रूप में अधिक लोकप्रिय हैं। पुराने नगर का सांस्कृतिक रहन–सहन, खान–पान तथा कला और हस्तशिल्प के विविध नमूने पर्यटन आकर्षण के केन्द्र हैं। जहां तक प्रमुख संग्रहालयों का प्रश्न है, सर्वाधिक पर्यटक सिटी पैलेस में स्थित राजकीय संग्रहालय, लोक कला मंडल तथा बागोर की हवेली स्थित संग्रहालय में ही आते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि इन संग्रहालयों के साथ अन्य आकर्षण भी सन्नद्ध हैं। यथा राजकीय संग्रहालय सिटी पैलेस के ही एक हिस्से पर स्थित है। वहां पर भी सिटी पैलेस आने वाले पर्यटकों का पांचवां हिस्सा ही जाता है।

Scanned with CamScanner

लोक कला मंडल में कठपुतली और लोक नाट्य तथा नृत्य के प्रदर्शन की आयोजना भी होती है। इसी प्रकार बागौर की हवेली में पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का कार्यालय तथा पर्यटन विभाग का केन्द्र संचालित है तथा सामान्यतः कला–प्रदर्शनियों का आयोजन यहां होता रहता है। जनजाति संग्रहालय तथा मानव विज्ञान सर्वेक्षण संग्रहालय में पर्यटकों का आगमन अत्यन्त सीमित मात्रा में ही होता है। आहड़ जैसा नगर के बीचों बीच स्थित तथा पुरातात्तिवक सम्पदा की दृष्टि से महत्वपूर्ण संग्रहालय भी पर्यटकों की प्रतीक्षा करता है।

स्पष्टतः इस संदर्भ में सर्वप्रथम जो तथ्य उभर कर आता है वह यह है कि भारत की ऐतिहासिक पर्यटन नीति में संग्रहालयों को व्यापक स्थान नहीं दिया गया है। क्षेत्रीय–स्थानीय स्तरों पर भी संग्रहालयों के प्रति जनजागृति की कमी है। यहां तक कि स्कूलों में भी कभी–कभार ही संग्रहालयों के शैक्षिक भ्रमण की औपचारिकता हो पाती है। यहां तक कि नगण्य शुल्क एवं निःशुल्क भ्रमण वाले संग्रहालयों में भी आगन्तुकों की कम संख्या देश की समृद्ध पुरा–संस्कृति एवं वैभव के प्रतीकों के प्रति स्वाभाविक रुझान के अभाव को प्रदर्शित करती है। नगर से दूर स्थित संग्रहालयों में आगन्तुकों की कम संख्या को तार्किक रूप से स्वीकार किया भी जा सकता है, किन्तु आहड़ जैसे नगर के बीचों–बीच स्थित संग्रहालय में भी प्रतिदिन औसतन 15–20 आगन्तुकों का आगमन इस ओर बढ़ती उदासीनता को दिखाता है।

संग्रहालय समृद्ध भारतीय ऐतिहासिक विरासत के संवाहक एक प्रमाण दोनों रूपों में देखे जा सकते हैं। बहुत बार भग्न विरासतों की भव्यता और महत्ता का आकलन संग्रहालयों में स्थित उनके अवशेषों द्वारा ही हो पाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी संग्रहालय विदेशी मुद्रा अर्जन के माध्यम से देश के आर्थिक विकास में अपनी सहभागिता निभाने के साथ–साथ विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक सेतु की भी भूमिका निभाते है। आवश्यकता इस बात की है कि संग्रहालयों के परिप्रेक्ष्य में व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पर्यटन नीति में उसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जाए। राजस्थान सरकार को भी संग्रहालयों को ऐतिहासिक पर्यटन के साथ जोड़ते हुए राज्य की आधिकारिक वेबसाइट एवं अन्य प्रचार माध्यमों से जन जाग्रति का प्रयास करना होगा। संग्रहालयों के रखरखाव को सुरुचिपूर्ण बनाते हुए प्रस्तुतीकरण को आकर्षक एवं ग्राह्य बनाना भी आवश्यक है। उदयपुर जैसे ऐतिहासिक पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र में संग्रहालय सर्किट की अवधारणा महत्वपूर्ण हो सकती हैं। इकॉनॉयूजियम तथा एथनोम्यूजियम के महत्वपूर्ण सामयिक आयामों के साथ जोड़ते हुए यह अवधारणा और महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि जनजातीय और कलात्मक दृष्टि से भी यह क्षेत्र अपार समृद्धिपूर्ण है और संभावनाओं से भरा है।

## संदर्भ सूची


1. डॉ. अरविन्द कुमार सिंह, संग्रहालय विज्ञान, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 2
2. वही, पृ. 3
3. वाल्मीकीय रामायण सुन्दरकाण्ड, चतुर्थ सर्ग, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ. 911
4. भासकृत प्रतिमानाटकम्, तृतीय अंक, आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी


Scanned with CamScanner

5. अर्जुनेन चित्रकरेणास्मदुपदिष्टमार्यस्य चरितमस्यां चित्रवीथ्यामभिलिखितम् ।, उत्तरराम चरित, डॉ. शिव बालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर, पृ. 158
6. डॉ. प्रतिभा, भारत में पर्यटन उत्पाद एवं सांस्कृतिक ऐतिहासिक विरासत, एबीडी पब्लिशर्स, जयपुर, दिल्ली, पृ. 154
7. सिटी कारपोरेशन, उदयपुर प्रशासन रिपोर्ट सन् 1953–56, पृ.सं. 2
8. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–2, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 96–97, पृ. 841–843
9. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
10. गोपीनाथ शर्मा, धूलकोट की खुदाई, शोध पत्रिका, अंक 4, वर्ष 3, पृ. 223
11. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
12. मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान जिलेवार संस्कृति–ऐतिहासिक अध्ययन, भाग–1, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ. 49–50
13. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
14. राजस्थान पत्रिका, 17 सितम्बर, 2015
15. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
16. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
17. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
18. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
19. दैनिक भास्कर, 30 जनवरी, 2018
20. वही
21. राजस्थान पत्रिका, 17 सितम्बर, 2015
22. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
23. मोहनलाल गुप्ता, उदयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ. 93
24. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
25. तिथि पंड्या, उदयपुर क्षेत्र में विरसतीय पर्यटन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शीर्षक शोध प्रबन्ध, इतिहास विभाग, मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर, पृ. 156
26. व्यक्तिगत सर्वेक्षण

Scanned with CamScanner